अयोग्य था। श्रीकृष्ण ने **कुतः** शब्द से इस पर अपना विस्मय अभिव्यक्त किया है। आर्य संस्कृति के सदस्य से यह आशा नहीं की जाती कि वह ऐसी पौरुषहीनता प्रकट करेगा। 'आर्य' शब्द जीवन की गरिमा को जानने वाले, भगवत्-परायण संस्कृति वाले पुरुषों के लिए प्रयुक्त होता है। विषयी नहीं जानते कि जीवन का लक्ष्य भगवान् विष्णु की प्राप्ति करना है। प्राकृत-जगत् के बाह्य-रूप पर मोहित होने के कारण वे मुक्ति-तत्त्व से अनभिज्ञ ही रहते हैं। भव-मुक्ति के ज्ञान से शून्य होने से ऐसे व्यक्ति 'अनार्य' कहलाते हैं। क्षत्रिय होते हुए भी युद्ध से पराङ्मुख होकर अर्जुन अपने नियत कर्तव्य से च्युत हो रहा था। अतएव उसकी इस भीरुता को अनार्योचित कहा गया। ऐसी कर्तव्य-विच्युति भगवत्प्राप्ति एवं सांसारिक यश-उपलब्धि में सहायक नहीं होती; इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वजनों के लिए अर्जुन की उस तथाकथित करुणा का अनुमोदन नहीं किया।

25.1

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।।३।।

क्लैब्यम्=नपुंसकता को; **मा स्म गमः**=मत प्राप्त हो; **पार्थ**=हे कुन्तिनन्दन; **न**=नहीं; **एतत्**=यह; **त्वयि**=तेरे; **उपपद्यते**=योग्य है; **क्षुद्रम्**=तुच्छ; **हृदय**=हृदय की; **दौर्बल्यम्**=दुर्बलता को; **त्यक्त्वा**=त्याग कर; **उत्तिष्ठ**=खड़ा हो; **परंतप**=हे शत्रुओं का दमन करने वाले अर्जुन।

अनुवाद

हे पार्थ! इस अपकर्षकारी नपुंसकता को मत प्राप्त हो। यह तेरे योग्य नहीं है। हे परंतप! हृदय की इस तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो।।३।।

तात्पर्य

यहाँ अर्जुन को **पृथापुत्र** कहा गया है। पृथा अर्थात् कुन्ती श्रीकृष्ण की बुआ थीं। इस सम्बन्ध से अर्जुन श्रीकृष्ण का स्वजन हुआ। जो क्षत्रिय ललकारे जाने पर भी युद्ध से विमुख हो जाता है, उसे तिरस्कार के रूप में 'क्षत्रियबन्धु' कहते हैं। इसी प्रकार असदाचारी ब्राह्मण 'द्विजबन्धु' कहलाता है। इस कोटि के क्षत्रिय तथा ब्राह्मण अपने पिताओं के अयोग्य पुत्र हैं। श्रीकृष्ण नहीं चाहते कि अर्जुन 'क्षत्रियबन्धु' कहलाये। अर्जुन उनका परम अन्तरंग सखा है; इसी से रथ पर श्रीकृष्ण स्वयं उसका मार्ग-निर्देश कर रहे हैं। इन गुणों के होते हुए भी यदि वह युद्धभूमि का परित्याग कर देगा तो उसका अपयश ही होगा। अतः श्रीकृष्ण ने कहा कि ऐसा व्यवहार उस (अर्जुन) के योग्य नहीं है। उत्तरस्वरूप अर्जुन कह सकता है कि परम पूज्य भीष्म तथा अन्य स्वजनों के प्रति विशालहृदयता के कारण ही तो वह युद्ध से उपरत हो रहा है; किन्तु श्रीकृष्ण के मत में ऐसी उदारता आप्तपुरुषों द्वारा प्रमाणित नहीं है। अतएव श्रीकृष्ण की प्रत्यक्ष शिक्षा के अनुसार अर्जुन जैसे वीरपुरुष को इस प्रकार की उदारता अथवा तथाकथित अहिंसा को त्याग देना चाहिए।